

पशु आहार में खरपतवार

पवन कुमार माहौर*

“ पशुचारे के रूप में उपयोग होने वाले विभिन्न खरपतवार-झरबेरी *(जिजिफस नुमुलेरिया)*, चौलाई (अमरांथस स्पीसीज), लहसुआ *(डिजेरा आरवेंसिस)*, बथुआ *(चेनोपोडियम अल्बम)*, प्याजी *(एसफोडेलास तेनूफोलिअस)*, कृष्णानील *(एनागेलिस आरवेंसिस)*, कासनी *(सिचोरियम एंटीबास)*, दूबघास *(सिनोदोन डेक्टाइलोन)*, पुर्नवनवा *(बोहेरिआ डिफ्फुसा)*, मदार या आंकड़ा *(कैलोट्रोपिस गिगैंटिका)*, अपराजिता या तितली मटर *(क्लिटोरिया टेरनेटिया)*, जंगली मटर *(लथाइरास अफका)*, जंगली गोभी *(लोनिया अप्लॅनिफोलिया)*, जंगली जूट या रजान *(कोरकोरस ओलिटोरियस)*, हिरनखुरी *(कॉन्वॉल्वुलूस आरवेंसिस)*, जंगली जई *(एवेना फटफआ)*, खेजड़ी *(प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा)* आदि हैं। ”

भारत की अर्थव्यवस्था एवं खाद्य उपलब्धता कृषि पर निर्भर है। कृषि को विभिन्न जैविक और अजैविक कारक प्रभावित करते हैं। इन कारकों के कारण कृषि की उत्पादकता प्रभावित होती है। जैविक कारकों में खरपतवार प्रमुख है, जो कृषि को प्रभावित कर उत्पादकता में कमी लाता है। खरपतवारों के नकारात्मक एवं हानिकारक प्रभावों के बारे में ही जानते ही हैं। खरपतवारों की किस्में हमारे पालतू पशुओं के लिए चारे का महत्वपूर्ण स्रोत भी हैं। विभिन्न लाभकारी खरपतवार प्रजातियों से पशुओं के लिए पोषक तत्वयुक्त चारा प्राप्त होता है।

पशुचारे के रूप में उपयोग होने वाले कुछ खरपतवारों का विवरण अग्रलिखित हैं:

जंगली जूट या रजान

इसकी पत्तियों में 18.38 प्रतिशत राख, 12.54 प्रतिशत कच्चा प्रोटीन, 11.99 प्रतिशत क्रूड लिपिड और 19.56 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट शामिल होता है। पत्तियों की उच्च ऊर्जा मूल्य क्रमश: 200.78 किलो कैलोरी/100 ग्राम होती है। खनिज विश्लेषण के अनुसार पोटेशियम (2814.15 मि.ग्रा./100 ग्राम) और मैग्नीशियम (76.69 मि.ग्रा./100 ग्राम) है। इसकी पत्तियां पोटेशियम, लोहा, तांबा, मैंगनीज और जस्ते की समृद्ध स्रोत हैं। इसके साथ ही मानव और पशु पोषण के लिए इनमें आवश्यक उच्च ऊर्जा मूल्य होता है। इसकी पत्तियां लसलसी होती हैं। अत: पशु इनको बड़े चाव से खाते हैं। यह पौधा खरीफ

*तकनीकी सहायक, भाकृअनुप-केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर

तितली मटर



तितली मटर या क्लाइटोरिया टेर्नेटा एक दलहनी कुल का खरपतवार है। इसका चारा पशुओं के लिए पौष्टिक स्वादिष्ट एवं पाचनशील होता है। इसका तना बहुत पतला एवं मुलायम होता है एवं पत्तियां, चौड़ी एवं अधिक संख्या में होती हैं। इस कारण इसका चारा ‘हे’ एवं साइलेज बनाने के लिए उपयुक्त माना गया है। अन्य दलहनी फसलों की तुलना में इसमें कटाई या चराई के बाद कम अवधि में ही पुन: बढ़वार शुरू हो जाती है। इसमें चारा उत्पादन की क्षमता अधिक होती है। तितली मटर के चारे में पोषक तत्व जैसे-प्रोटीन एन 6.25 की मात्रा 19-23 प्रतिशत, क्रूड फाइबर 29-38 प्रतिशत, ईथर एक्स्ट्रेक्ट 3.4-4.4 प्रतिशत, एनडीएफ 42-54 प्रतिशत, एडीएफ 38-47 प्रतिशत, फाइबर 21-29 प्रतिशत, लिग्निन 14-16 प्रतिशत, राख 7-9 प्रतिशत और पाचनशक्ति 60-75 प्रतिशत होती है।



पुष्पीय कोमल तनायुक्त हिरणखुरी

में बारिश के मौसम की शुरुआत में उग आता है और खरीफ की समाप्ति पर बीजोत्पादन कर लेता है।

हिरनखुरी

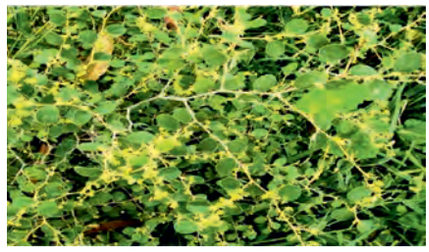
इसका सेवन जुगाली करने वाले पशुओं जैसे बकरी/भेड़ों द्वारा किया जाता है। इसमें कैल्शियम, फॉस्फोरस और मैग्नीशियम पाया जाता है। इसमें एनडीएफ 33.8 प्रतिशत, क्रूड प्रोटीन 11.6 प्रतिशत और सकल पाच्य पोषक तत्व 72.1 प्रतिशत पाए जाते हैं। इसकी पत्तियों, टहनियों को पशुओं द्वारा खाया जाता है। इसकी सूखी पत्तियों और हरी ताजा पत्तियों को पशु द्वारा पसंद किया जाता है। इसके पौधे को अधिक परिपक्व अवस्था में चराया या काटा जा सकता है। जुगाली करने वाले पशुओं के लिए पोषक तत्वों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त पोषण एवं गुणवत्तापूर्ण चारा हिरनखुरी है।

झरबेरी

इसकी पत्तियों में 14 प्रतिशत कच्चा प्रोटीन, 3 प्रतिशत ईथर अर्क, 17 प्रतिशत क्रूड फाइबर, 56 प्रतिशत नाइट्रोजन मुक्त अर्क, 73 प्रतिशत कुल कार्बोहाइड्रेट, 10 प्रतिशत कुल राख, 2.8 प्रतिशत कैल्शियम और 0.14 प्रतिशत फॉस्फोरस होता है। झरबेरी की पत्तियों में विभिन्न ट्रेस तत्वों में समृद्ध,अर्थात लोहा, मैंगनीज, जस्ता और तांबा पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इसी तरह मैंगनीज और तांबे की मात्रा न्यूनतम से अधिक है। पशुओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए आवश्यक पोषक तत्व पाए जाते हैं। केवल जिंक की मात्रा कम पायी जाती है। जिजीफस न्यूमुलेरिया को स्थानीय भाषा में झरबेरी या बोर्डी कहा जाता है। यह एक सूखा प्रतिरोधी देसी कंटीली झाड़ी है, जो अर्द्धशुष्क रेतीली मृदा में बहुतायत से पनपती है और देश के शुष्क क्षेत्रों में पाई जाती है। चरने वाले पशुओं जैसे भेड़, बकरी, ऊंट और गधों आदि पशुओं के लिए यह आसानी से उपलब्ध हो जाती है।

दूब घास

दूब घास पशुचारा का एक प्रमुख प्राकृतिक स्रोत है। उचित मात्रा में सभी पशुओं को घास की आवश्यकता होती है। समग्र पशुपालन में पशु आहार तथा घास का उत्पादन एवं चारागाह का संरक्षण एक महत्वपूर्ण काम है। दूब घास एक बीजपत्री हरा पौधा है। यह गाय, भैंस, बकरी आदि पशुओं के चारे के रूप में काम आती है। मिट्टी के अंदर दूब घास की जड़ों का घना जाल होता है, जो वर्षाजल से मिट्टी के कटाव और बहाव को



पशु द्वारा सीधे चरने योग्य झरबेरी की पत्तियां

कम कर देता है। भूमि के ऊपर घनी पत्तियां होने से वायु द्वारा मिट्टी का कटाव भी नहीं हो पाता है। दूब घास में एक उत्कृष्ट फैलाव की क्षमता होती है। इसके स्टोलन 7.5 सें.मी./दिन से अधिक बढ़ने में सक्षम होते हैं। इसके शुष्क भार की पैदावार लगभग 5-15 टन/हैक्टर होती है। दूब घास सबसे अधिक चराई प्रतिरोधी घासों में से एक है और एक बार स्थापित होने पर यह बार-बार चराई का सामना कर सकती है।

चौलाई

शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वर्षा के बाद वनस्पति की एक साथ अधिक वृद्धि होती है। इन मानसून जैव उत्पादों में अधिकांशत: चौलाई एक प्रमुख वानस्पतिक उत्पाद है, जो कि जुलाई से सितंबर यानी 2-3 माह में परिपक्व हो जाती है। यह वानस्पतिक पशु पोषण एवं अन्य महत्वपूर्ण रसायनों से भरपूर तथा अधिक पाचक होती है। यदि इन वनस्पतियों को समय पर एकत्रित करके स्थानीय तकनीकों से सुखाया जाये, तो यह चारे की कमी के दिनों में पशुधन के चारे का अच्छा स्रोत हो सकती है। चौलाई बंजर, कृषि एवं बेकार भूमि में मानसून में बहुतायत में पैदा होती है, जिससे 10-15 क्विंटल प्रति हैक्टर तक सूखा जैव उत्पादन तक प्राप्त किया जा सकता है। इसके पौधे में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में होती है तथा इसकी पत्तियां रसीली एवं तना मुलायम होता है, जो कि भेड़, बकरी एवं गायों के लिए स्वादिष्ट आहार हो सकता है। ऐमारैंथस या चौलाई प्रजातियों में बेहतर पोषण गुण हैं और इसमें अन्य चारे की तुलना में रूमेन अविकसित प्रोटीन का अधिक अनुपात है। इसके सेवन से पाचन क्षमता में वृद्धि होती है। रासायनिक संरचना, खनिज सामग्री, इन विट्रो डाइजेस्टिबिलिटी और मध्यम कच्चे प्रोटीन मूल्य के आधार पर कहा जा सकता है कि इस चारे में जुगाली करने वाले फीडस्टफ के रूप में क्षमता है और जब घास का 'हे' बनाना संभव नहीं हो, तब ऐमारैंथस को साइलेज के रूप में संरक्षित किया जा सकता है। ■

कासनी या सिचोरियम एंटीबास या चिकोरी



चिकोरी बहुवर्षीय शाकीय पौधा है। इसके फूल चमकीले नीले के साथ कभी-कभी सफेद या गुलाबी होते हैं। इसकी कई किस्मों की खेती सलाद के पत्तों और जड़ों के लिए की जाती है, जो कॉफी के विकल्प और खाद्य योज्य के रूप में उपयोग की जाती हैं। कासनी की जड़ का एक अर्क, खाद्य निर्माण में स्वीटनर और आहार फाइबर के स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। कासनी को पशुओं के चारे की फसल के रूप में उगाया जाता है। यह अपने मूल में सड़कों के किनारे एक जंगली पौधे के रूप में रहता है। अनुकूल परिस्थितियों में चिकोरी गर्म मौसम में बड़ी मात्रा में उच्च गुणवत्ता वाले चारे का उत्पादन करती है। चारे के रूप में चिकोरी का उपयोग पशुओं में लग्युम पौधों के समान पोषणयुक्त है और घास आधारित चरागाहों से अपेक्षाकृत अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। इसके अलावा कासनी पशुओं में कुछ आंतरिक परजीवियों को कम कर सकती है। इसमें कृमिनाशकों के उपयोग को कम करने की क्षमता होती है।